Changing Dynamics Politicians & Bureaucrats

Post 1967

A Historical Perspective

Archana Sawshilya

About the Book

The book analyses the [illegible] between [illegible] and permanent executives [illegible] deterioration in the relationship [illegible] democracy. The problem [illegible] further resulting in various [illegible] problems. The political-administrative system [illegible] both in terms of structure [illegible] governance. Bureaucracy has [illegible] and adaptability in their [illegible] masters. The political masters [illegible] constructive relationship with the permanent executives.

About the Author

Dr Archana Sawshilya is working as Associate Professor in [illegible] Mahavidyalaya, University of Delhi. She has had a distinguished academic career spanning over the last 18 years. Her areas of interest are Public administration, Indian Government and Politics, gender studies and human rights. She has co-authored four books and also worked as consultant editor for several others. She has contributed chapters in the edited books of reputed academicians. For her Co-Authored book on Disaster Management (2volumes), she was felicitated by Red Cross Society, Bihar Branch. She has presented several papers at national and international seminars and conferences and has several articles to her credit published in national journals and newspapers. She has been delivering lectures in orientation programmes, workshops and conferences. She has been actively associated with many Academic institutions Society, Indian Academy Of Social Science Congress, Authors Guild Of India, Indian Institute of Public Administration, Delhi, All India Women's Association, South West Delhi, Bihar Political Science Association, Bihar, PAHAL Social Organisation, CHETNA-Conscience for Women, Delhi, Association of Neighborhood, Delhi-ANHLGT.

ISBN-978-93-85144-74-6

लोक प्रशासन

मूल अवधारणाएँ

अर्चना 'सौशिल्य'

प्रस्तुत पुस्तक राजनीतिशास्त्र के बी.ए. प्रोग्राम तथा आनर्स के छात्रों के लिए अति उपयोगी है, जिनके पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर लोक प्रशासन के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं का विस्तार से विवेचन किया गया है। लोक प्रशासन जैसे जटिल विषय को अत्यंत सरल एवं स्पष्ट तरीके से समझा कर हिन्दी माध्यम में लिखी यह पुस्तक पाठको के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। इसका औचित्य राजनीति–शास्त्र, लोक प्रशासन के विद्यार्थियो तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सार्थक होगा।

डॉ. अर्चना 'सौशिल्य' (एसोसिएट प्रोफेसर), दिल्ली विश्वविद्यालय के अदिति महाविद्यालय में राजनीति–शास्त्र विभाग में पिछले 20 साल से कार्यरत हैं इन्होनें अनेक पुस्तकें लिखी हैं, जैसे लोक प्रशासन (अनामिका पब्लिकेशन 1999) Disaster Management Vol. I & II, (Satyam Publications) Contemporary India (Satyam Publications)। इनका रुझान राजनीति–विज्ञान के साथ–साथ लोक प्रशासन विषयक रचनाओं तथा शोध पर अत्यधिक रहा है। जो अनेक पुस्तकों में अध्याय के रुप में वर्णित है।

₹ 695/-

शिवालिक प्रकाशन
4648/21, Ansari Road, Daryaganj
New Delhi-110002
Ph./Fax: 011-42351161
E-mail: shivalikprakashan@yahoo.com
Website: shivalikprakashan.in

ISBN 978-93-87195-91-2

गोधूलि की सुबह
अर्चना सौशिल्या

लोक
प्रशासन
सिद्धांत एवं व्यवहार

विषयानुक्रम

भूमिका xi

अध्याय 1 1
लोक प्रशासन: एक परिचय
सुषमा यादव, सुनील कुमार

लोक प्रशासन के विभिन्न आयाम, विकास प्रशासन, लोक प्रशासन का मूल्याधारित आयाम: जॉन रॉल्स के विचार, सार्वजनिक चयन दृष्टिकोण, भारत में लोक प्रशासन, लोक प्रशासन एवं उदारीकरण / वैश्वीकरण, सुशासन

अध्याय 2 15
लोक प्रशासन : अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र एवं विकास
बलवान गौतम, सुमन यादव

अर्थ एवं परिभाषा, लोक प्रशासन की प्रकृति : विविध दृष्टिकोण, लोक प्रशासन: कला अथवा विज्ञान, लोक प्रशासन का क्षेत्र, लोक प्रशासन का महत्त्व एवं भूमिका, विकसित एवं विकासशील समाजों में लोक प्रशासन की भूमिका, विकसित देशों में लोक प्रशासन की विशेषताएं, लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन, लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन में समानताएं, लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन में असमानताएं, लोक प्रशासन : अध्ययन के विषय के रूप में विकास

अध्याय 3 47
लोक प्रशासन के उपागम
अख़्तर अली, कल्पना कुमारी

भूमिका, लोक प्रशासन के अध्ययन के उपागम, 1. शास्त्रीय या संगठनात्मक या परंपरावादी दृष्टिकोण, 2. मानव संबंध उपागम, हॉथोर्न प्रयोग के परिणाम, 3. समकालीन उपागम, नवीन लोक प्रबंध दृष्टिकोण

अध्याय 4 64
प्रशासन के सिद्धांत
अर्चना सौशिल्य

प्रशासनिक सिद्धांत, परंपरागत सिद्धांत, हेनरी फेयोल : प्रबंधन सिद्धांत, आलोचनात्मक समीक्षा, लूथर गुलिक तथा उर्विक, मूनी एवं रैले की विचारधारा, वैज्ञानिक प्रबंध, आलोचनात्मक समीक्षा, नौकरशाही/प्रशासकीय सिद्धांत, वेबर का

ओरियंट ब्लैकस्वान

भारतीय शासन और राजनीति

प्रस्तावना

महेंद्र प्रसाद सिंह

संपादन

बासुकी नाथ चौधरी
युवराज कुमार

लेखक मंडल

- डॉ. बासुकी नाथ चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. युवराज कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. गीता सहारे, असिस्टेंट प्रोफेसर, लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- संजय शर्मा, सेंटर फॉर फेडरल स्टडीज, जामिया हमदर्द, दिल्ली
- प्रदीप कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. मधु दमानी (राठी), असिस्टेंट प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. मनीषा रॉय, असिस्टेंट प्रोफेसर, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- स्मिता यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. आशुतोष कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, सत्यवती कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ अर्चना सौशिल्य, एसोशिएट प्रोफेसर, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. बलवान गौतम, एसोशिएट प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. रणजीत कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, शहीद भगत सिंह कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय
- रीतेश भारद्वाज, असिस्टेंट प्रोफेसर, श्याम लाल कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय
- दीपशिखा, अस्सिटेंट प्रोफेसर, जानकी देवी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
- अंजू अग्रवाल, एसोशिएट प्रोफेसर, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. गीता सहारे, असिस्टेंट प्रोफेसर, लक्ष्मी बाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- नागेन्द्र शर्मा, एसोशिएट प्रोफेसर, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. मयंक कुमार, एसोशिएट प्रोफेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- प्रवीण कुमार झा, अस्सिटेंट प्रोफेसर, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- कुसुम लता चड्ढा, एसोसिएट प्रोफेसर, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- श्रुति शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. कविता अरोड़ा, असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

13

प्रशासन की प्रकृति तथा राजनैतिक एवं विकास प्रक्रिया में इसकी भूमिका

लोक प्रशासन मानवीय सभ्यता के विकास की प्रक्रिया में किसी-न-किसी रूप में विद्यमा है। लोक प्रशासन को मानवीय क्रियाकलापों का संपूर्ण संरक्षक, विनाशक एवं पोषक कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। सभ्य सरकार और सभ्यता का भविष्य ही योग्यता पर निर्भर करता है कि प्रशासन का दर्शन एवं व्यवहार कितना विकसित है, समाज के लोक कार्यों के संपादन में कितना समर्थ है। लोक प्रशासन मानव जीवन विविध एवं बहुल आवश्यकताओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा आदि को करने में सहायक है। इसकी विषय वस्तु सकारात्मक एवं सृजनात्मक है। इसका जनकल्याण है। इसकी प्रकृति, विषय वस्तु तथा क्षेत्र सभी इसे मिलकर आधुनिक व्यवस्था का केंद्रबिंदु बना देते हैं।[1]

लोक प्रशासन प्रत्येक समाज की एक आधारभूत आवश्यकता है, यह एक ऐसा यंत्र जिसके माध्यम से सरकारी योजनाएं निर्मित एवं कार्यान्वित होती हैं। राज्य की नीतियों सफलता एवं विफलता, राष्ट्रीय एकरूपता प्रशासन की क्षमता पर ही आधारित है। प्रशासन वस्तुतः विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संबद्ध मानवीय प्रयत्नों का दिशा पथ-प्रदर्शन तथा समाकलन के साथ-साथ ज्ञान का एक भाग है। लोक प्रशासन एक है जिसके द्वारा समाज में परिवर्तन लाए जाते हैं, इसीलिए इसे सामाजिक परिवर्तन का माना जाता है। लोक प्रशासन एक शैक्षणिक अध्ययन के विषय के रूप में सरकारी तंत्र प्रक्रियाओं का अनिवार्य रूप से अध्ययन करता है। इसका प्रयोग सरकारी गतिविधियों प्रभावशाली संपादन में किया जाता है। लोक प्रशासन वस्तुतः आज निर्णयकर्त्ता भावी का योजनाकार, उद्देश्य व लक्ष्य निर्धारक, सरकारी कार्यक्रमों के लिए सार्वजनिक और धनराशि प्राप्त करने के लिए सरकारी तंत्रों तथा नागरिक संगठनों के बीच समन्वयकर्त्ता है। लोक प्रशासन कर्मचारियों को निर्देश देने, निरीक्षण देने, नेतृत्व प्रदान कार्य निष्पादन के आकलन आदि जैसी गतिविधियों से संबंधित है। लोक प्रशासन क्रियात्मक भाग है।

लोक प्रशासन ''लोक'' एवं ''प्रशासन'' दो शब्दों का सम्मिलित योग है। शब्द का अर्थ है सार्वजनिक एवं जनता, जिसका प्रयोग सरकार के क्रियाकला

डॉ अर्चना सौशिल्य, एसोशिएट प्रोफेसर, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय